



# Mukesh Kumar shakya

15 Aug 1965

05:00 PM

Farrukhabad

Model: Gem-Report

Order No: 121777101

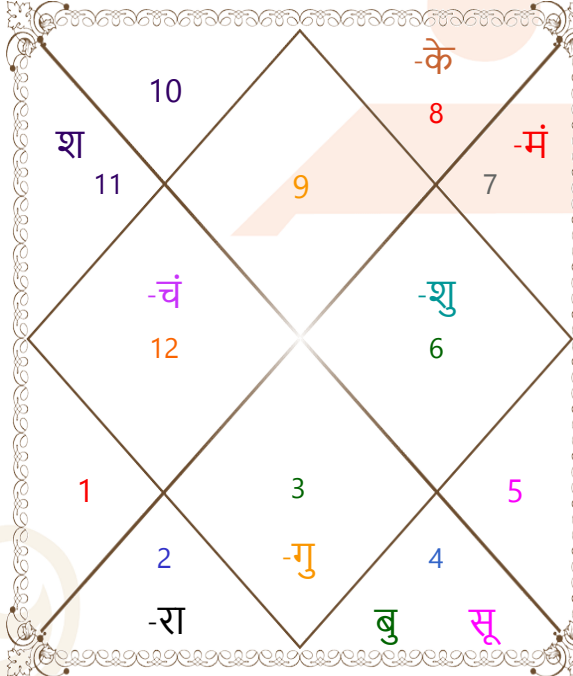
तिथि 15/08/1965 समय 17:00:00 वार रविवार स्थान Farrukhabad चित्रपक्षीय अयनांश : 23:22:22  
अक्षांश 27:23:00 उत्तर रेखांश 79:35:00 पूर्व मध्य रेखांश 82:30:00 पूर्व स्थानिक संस्कार -00:11:40 घंटे

पंचांग	अवकहड़ा चक्र
साम्पातिक काल : 14:23:00 घं	गण : मनुष्य
वेलान्तर : 00:04:29 घं	योनि : गौ
सूर्योदय : 05:42:20 घं	नाड़ी : मध्य
सूर्यास्त : 18:49:33 घं	वर्ण : विप्र
चैत्रादि संवत : 2022	वश्य : जलचर
शक संवत : 1887	वर्ग : सर्प
मास : भाद्रपद	युंजा : अन्त्य
पक्ष : कृष्ण	हंसक : जल
तिथि : 3	जन्म नामाक्षर : दू-दूधेश्वर
नक्षत्र : उ.भाद्रपद	पाया(रा.-न.) : लौह-लौह
योग : सुकर्मा	होरा : शनि
करण : विष्टि	चौघड़ियां : रोग

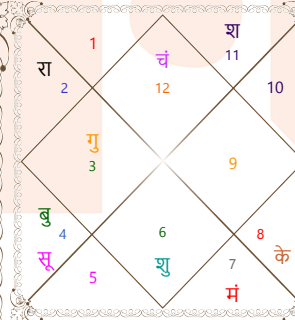
विंशोत्तरी	योगेनी
शनि 18वर्ष 3मा 10दि शुक्र	भद्रिका 4वर्ष 9मा 21दि संकटा
25/11/2007 25/11/2027	07/06/2019 07/06/2027
शुक्र 27/03/2011	संकटा 18/03/2021
सूर्य 26/03/2012	मंगला 07/06/2021
चन्द्र 25/11/2013	पिंगला 16/11/2021
मंगल 25/01/2015	धान्या 18/07/2022
राहु 25/01/2018	भ्रामरी 07/06/2023
गुरु 25/09/2020	भद्रिका 17/07/2024
शनि 25/11/2023	उल्का 16/11/2025
बुध 25/09/2026	सिद्धा 07/06/2027
केतु 25/11/2027	

ग्रह	व अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं-	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न		28:44:46	धनु	उत्तराषाढा	1	सूर्य	मंगल	---	0:00			
सूर्य		29:02:23	कर्क	आश्लेषा	4	बुध	शनि	मित्र राशि	1.52	अमात्य	पितृ	सम्पत
चन्द्र		03:50:25	मीन	उ.भाद्रपद	1	शनि	शनि	सम राशि	1.23	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल		03:28:32	तुला	चित्रा	4	मंगल	शुक्र	सम राशि	1.43	पुत्र	भ्रातृ	वध
बुध	व अ	29:36:52	कर्क	आश्लेषा	4	बुध	शनि	शत्रु राशि	0.91	आत्मा	ज्ञाति	सम्पत
गुरु		01:43:23	मिथु	मृगशिरा	3	मंगल	बुध	शत्रु राशि	1.24	कलत्र	धन	वध
शुक्र		01:45:28	कन्या	उ.फ़ाल्गुनी	2	सूर्य	गुरु	नीच राशि	1.30	ज्ञाति	कलत्र	प्रत्यारि
शनि	व	22:04:27	कुंभ	पू.भाद्रपद	1	गुरु	शनि	स्वराशि	1.39	भ्रातृ	आयु	अतिमित्र
राहु	व	17:25:45	वृष	रोहिणी	3	चन्द्र	शनि	मित्र राशि	---	---	ज्ञान	साधक
केतु	व	17:25:45	वृश्चि	ज्येष्ठा	1	बुध	बुध	मित्र राशि	---	---	मोक्ष	सम्पत

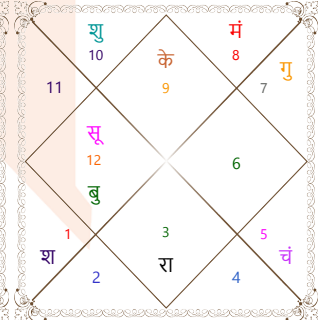
### लग्न-चलित



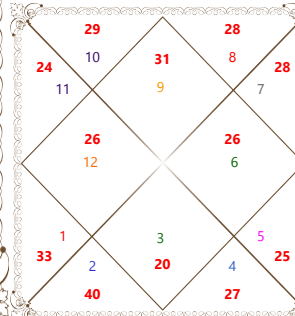
### चन्द्र कुंडली



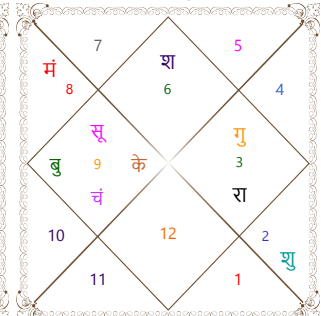
### नवमांश कुंडली



### सर्वाष्टकवर्ग



### दशमांश कुंडली

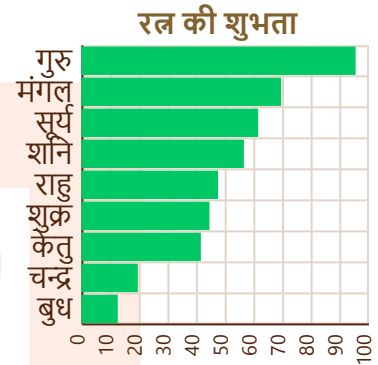


## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	९५	दम्पति, स्वास्थ्य, सुख
मूंगा	मंगल	६९	धनार्जन, सन्तति सुख, कम खर्च
माणिक्य	सूर्य	६१	दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय
नीलम	शनि	५६	पराक्रम, धन
गोमेद	राहु	५७	शत्रु व रोग, व्यावसायिक हानि
हीरा	शुक्र	५४	व्यावसायिक हानि, शत्रु व रोग, हानि
लहसुनिया	केतु	५१	व्यय, हानि
मोती	चन्द्र	१९	ग्रह कलेश, दुर्घटना
पन्ना	बुध	१२	दुर्घटना, दाम्पत्य कष्ट, व्यावसायिक हानि



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	25/11/1983	५७	०	५६	२५	९५	५३	६८	५५	१६
बुध	24/11/2000	६७	०	६९	५३	९५	५३	५६	५७	५१
केतु	25/11/2007	५७	०	५५	१२	९५	५३	५७	२२	५८
शुक्र	25/11/2027	५७	०	६९	२५	९५	५९	६२	५५	५२
सूर्य	25/11/2033	७३	५१	५५	१२	१००	१९	५७	२२	१६
चन्द्र	25/11/2043	६७	५४	६९	२५	९५	५४	५६	२२	१६
मंगल	25/11/2050	६७	५१	६१	०	१००	५४	५६	२२	५२
राहु	24/11/2068	५७	०	५६	१२	९५	५३	६२	६१	१६
गुरु	24/11/2084	६७	५१	५५	०	१००	१९	५६	५७	५१

# विस्तृत रत्न विचार

**ओषधिमणिमन्त्राणां ग्रह-नक्षत्रतारकाः।  
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत्॥**

ओषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह-नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही हो, तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ-साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह जातक की कुंडली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो, उसका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य हैं।

रत्न जितना स्वच्छ और सही कटाव का होगा, उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्ण फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन, शरीर के वजन और ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है, तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न का शरीर से स्पर्श होना अति आवश्यक है। अंगुली में और विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना पड़े, तो रत्न के वार के दिन ही उसे उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए, तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष समाप्त हो गया है। यदि रत्न का रंग फीका पड़ जाए, तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हो गया है। यदि रत्न में दरार पड़ जाए, तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है; तब ग्रह की शांति कराएं तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः धारण करें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हों, उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि जातक किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है, तो वह इन रत्नों के स्थान पर रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रहों की शुभता प्राप्त कर सकता है, अन्यथा मंत्र जाप करें। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ाया जा सकता है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश 'जीवन रत्न' होता है और इसे धारण करने से जातक को स्वास्थ्य लाभ, व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न 'भाग्य रत्न' कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोत्तरी होती है और यह मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न 'कारक रत्न' कहलाता है। इसके धारण करने से कार्यों में प्रगति, धन लाभ व चहुंमुखी विकास प्राप्त होता है। जातक को कौन सा रत्न पहनना चाहिए और कौन सा नहीं, इसकी विस्तृत जानकारी नीचे दी जा रही है।

शुभ रत्न, धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारंभ करने से उसमें इच्छित सफलता प्राप्त होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप करने से मानसिक शांति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ जैसे अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से जातक को वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभ ज्ञान सिद्ध हो सकता है।

## आपकी कुण्डली और रत्न

आपके लिए पुखराज रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है।

पुखराज आपका जीवन रत्न है। इसे धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, आपके आत्मविश्वास और मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी।

इसे धारण करने से आपके जीवन में विशेष ऊर्जा का प्रवाह होगा और आपकी प्रतिभा बढ़ेगी। इस रत्न को धारण करने से आपके रुके हुए कार्य बन सकते हैं। स्वास्थ्य व सुख-संपत्ति का लाभ मिल सकता है। आपको कार्यों का जो श्रेय नहीं मिल पाता था, वह अब प्राप्त होने लगेगा। इस रत्न को धारण करने के कुछ ही समय बाद आपको सुख की अनुभूति होगी। अतः आप इस रत्न को बिना किसी दशा या गोचर विचार के जीवन पर्यन्त धारण करें, तो लाभ होगा।

आपके लिए मूंगा, माणिक्य एवं नीलम शुभ रत्न हैं, लेकिन ये दशानुसार शुभ या अशुभ फल देने में सक्षम हैं। अतः यदि आप इन्हें स्व-दशा या मित्र दशा में धारण करेंगे, तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इन्हें धारण न करना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपचार हेतु रुद्राक्ष धारण करना अथवा दान एवं मंत्र जाप करना श्रेष्ठ रहेगा।

गोमेद, हीरा और लहसुनिया रत्न आपके लिए अशुभ हैं, अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं, तो इनकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें। पूर्ण अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा इन्हें शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों को धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में गिरावट या धन हानि का सामना करना पड़ सकता है।

मोती और पन्ना रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है, क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुण्डली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः आपको इन रत्नों का सदैव त्याग करना चाहिए। इन्हें पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रतिकूल परिणाम मिल सकते हैं। इससे मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति में बाधा आ सकती है। इन रत्नों का जीवन भर के लिए त्याग करें, क्योंकि ये किसी भी दशा या गोचर में शुभ फलदायी नहीं होंगे।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

### पुखराज

आपकी कुण्डली में गुरु सप्तम भाव में स्थित है। आपको गुरु रत्न पुखराज धारण करना

चाहिए। पुखराज शुभ रत्न धारण कर आप गुरु की पूर्ण शुभता प्राप्त कर सकते हैं। पुखराज रत्न धारण करने के बाद लोग आपसे मिलकर प्रसन्न होंगे। रत्न की शुभता से आप मिलनसार व्यक्ति बनेंगे। आपकी पत्नी आपके लिए भाग्यशाली सिद्ध होंगी। यह रत्न आपको काव्य साहित्य, कला और शास्त्रों का प्रेमी बनाएगा। रत्न प्रभाव से आपको धन, सुख, श्रेष्ठ पद और मान्यता मिलेगी। पुखराज रत्न से आपको सरकारी कामों, कचहरी के कार्यों, परामर्श देने, सलाहकार के रूप में कार्य करने और चित्रकला आदि के द्वारा लाभ मिल सकता है।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में गुरु लग्नेश एवं चतुर्थेश हैं। गुरु आपके लिए विशेष शुभ ग्रह हैं अतः आप गुरु रत्न पुखराज धारण कर गुरु की पूर्ण शुभता प्राप्त कर सकते हैं। पुखराज रत्न धारण करने से आपका स्वास्थ्य बेहतर होगा। आपके रोगग्रस्त होने की संभावनाएँ कम हो सकती हैं। पुखराज रत्न आपको प्रसन्नचित्त, विवेकी, विनम्र और सौम्य स्वभाव का स्वामी बनाएगा। रत्न प्रभाव से आप धर्म, दया और सेवा के विषयों से जुड़ेंगे। पुखराज रत्न चतुर्थेश का रत्न होने के कारण आपको माता सुख, भूमि-भवन का सुख, संतान से पूर्ण सुख, विद्वान, गुणी, मनोवांछित पत्नी, धर्मपरायण, धनी एवं यशस्वी बना सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन प्रातःकाल शुद्ध होने के बाद, धूप-दीप दिखाकर तर्जनी अंगुली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद 'ॐ बृं बृहस्पतये नमः' का एक माला जाप 5 मुखी रुद्राक्ष की माला पर करना चाहिए। जाप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्य के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी और पीले वस्त्र। यह रत्न कम से कम 4 रत्ती से लेकर 8 रत्ती तक धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट, माला, ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं, तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं 5 मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

### मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपको धैर्यवान बनाएगा और साहसपूर्ण कार्यों से लाभ प्रदान करेगा। इस रत्न के प्रभाव से आप अपने क्रोध पर नियंत्रण बनाए रखेंगे। मूंगे रत्न की शुभता से आपकी वाणी में मधुरता आएगी और आपकी महत्वाकांक्षाओं में वृद्धि होगी। इसके प्रभाव से आप अपने गुरुजनों का अत्यधिक सम्मान करेंगे। मूंगा रत्न आपको ऊर्जावान एवं स्फूर्तिदायक बनाए रखेगा और आपके उत्साह को बढ़ाएगा। आपको मूंगा रत्न अवश्य धारण करना चाहिए।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में मंगल पंचमेश एवं द्वादशेश हैं। मंगल का रत्न मूंगा आपके लिए शुभ रत्न है। मूंगा रत्न धारण करने से नौकरी में बदलाव करना आपके लिए सरल हो सकता है। मूंगा रत्न के प्रभाव से आप सदाचारी, बुद्धिमान एवं विनम्र हो सकते हैं। यह रत्न आपको अपनी पत्नी से लाभ, पिता की धार्मिक आस्था, पिता की विदेश यात्रा और कोर्ट-कचहरी के निर्णयों में आपके अनुकूल

फल प्राप्त करा सकता है। इस रत्न की शुभता से आपको संतान सुख प्राप्त होगा तथा शयन संबंधी परेशानियां दूर होकर समझौते आपके पक्ष में हो सकते हैं।

मूंगा रत्न अनामिका अंगुली में चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातःकाल स्नानादि क्रियाओं से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने इष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप-दीप दिखाकर धारण करें। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र 'ॐ अं अंगारकाय नमः' का 1 माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल ग्रह की वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम 6 रत्ती से लेकर अधिकतम 8 रत्ती तक धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इसके साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी के रूप में धारण न कर पाएं, तो इसे लॉकेट के रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न चांदी के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इसके उपरत्न लाल हकीक एवं 3 मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

### माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य अष्टम भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आपके आर्थिक पक्ष को मजबूत करेगा। रत्न के प्रभाव से आप धन कमाने के साथ-साथ धन की बचत भी कर पाएंगे। आपको जीवनसाथी के माध्यम से धन का आगमन होगा। माणिक्य रत्न आपको एक सुखी जीवन देगा। यह रत्न आपके धैर्य को बनाए रखेगा। यह रत्न आपको अधिक से अधिक धन संचय करने में सहयोग करेगा। सूर्य रत्न माणिक्य आपके पिता से संबंध मधुर बनाएगा।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में सूर्य दशम भाव के स्वामी हैं। सूर्य के बेहतर फल प्राप्त करने के लिए आप सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर सकते हैं। माणिक्य रत्न आपका भाग्य रत्न है। यह रत्न आपको भाग्य का अनुकूल सहयोग देगा। माणिक्य रत्न धारण कर आप आत्मिक रूप से बली हो सकते हैं। यह रत्न आपको शक्तिशाली बना सकता है। आप धर्मपरायणता की ओर उन्मुख होंगे। आपकी अभिरुचि धार्मिक गतिविधियों की ओर हो सकती है। माणिक्य रत्न आपके वैवाहिक सुख में वृद्धि करेगा और आपको व्यापार में उन्नति देगा।

यह रत्न अनामिका अंगुली में स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप-दीप दिखाकर इसे धारण करें। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र 'ॐ घृणि सूर्याय नमः' का कम से कम 1 माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत सूर्य से संबंधित वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम 4 रत्ती से लेकर 8 रत्ती तक धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अत्यंत आवश्यकता होने पर इन्हें आप लॉकेट के रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता

पड़ने पर यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में असमर्थ हैं, तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

## नीलम

आपकी कुंडली में शनि तीसरे भाव में स्थित है। आपको शनि का रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपके रोगों में कमी करेगा और आपको अध्यात्म की ओर उन्मुख करेगा। यह रत्न आपको विदुषी, चतुर, विवेकी और शत्रुहंता बनाएगा। नीलम रत्न धारण करने से आप बुद्धिमती, दयालु और न्यायकर्ता बनेंगी। शनि रत्न नीलम आपके भाग्य को प्रबल करेगा। यह सफलता के संघर्ष और कठोर परिश्रम में आपकी सहायता करेगा। इससे भाइयों से संबंध मधुर होंगे और संतान सुख के योग बनेंगे।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में शनि द्वितीय एवं तृतीय भाव के स्वामी हैं। शनि की शुभता प्राप्ति के लिए आप शनि का रत्न नीलम धारण कर सकते हैं। नीलम रत्न आपके शरीर की अस्वस्थता को दूर करने में सहायक हो सकता है। नीलम रत्न की शुभता से आपको धन व परिवार का सुख प्राप्त होता रहेगा। यह रत्न आपके पराक्रम में वृद्धि करेगा। मित्रों और बंधुओं का सहयोग पाने के लिए भी आप नीलम रत्न धारण कर सकते हैं। नीलम रत्न की शुभता से आपको कार्यक्षेत्र में अनुकूल परिणाम प्राप्त होंगे। यह रत्न सरकारी क्षेत्रों से जुड़े कार्यों में आने वाली बाधाओं को कम कर सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर संध्या काल में स्नानादि के बाद शुद्ध होकर, अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं पुष्प से पूजन करने के बाद मध्यमा अंगुली में धारण करें। तत्पश्चात् शनि मंत्र 'ॐ शं शनैश्चराय नमः' का एक माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्नी या फिर 5-6 रत्नी का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा और पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट, माला, ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि आप नीलम धारण न कर पाएं, तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं 7 मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

## गोमेद

आपकी कुंडली में राहु छठे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में पूर्ण शुभ फल देने में असमर्थ है, अतः राहु का रत्न गोमेद आपको कुसंगति का शिकार बना सकता है। प्रतियोगिताओं में सफल होने के लिए आप गलत रास्तों का प्रयोग कर सकती हैं। दूसरे धर्म के लोगों से आपके मित्रतापूर्ण संबंध बढ़ सकते हैं, जो आपको लाभ भी पहुँचा सकते हैं। स्वास्थ्य और आयु के दृष्टिकोण से गोमेद धारण करना आपके लिए अनुकूल नहीं रहेगा। साहस की कमी आपको बड़े कार्यों को अंजाम देने से रोक सकती है। गोमेद के प्रभाव से आपको रोगों, ऋण और शत्रुओं पर विजय पाने के लिए विशेष चतुराई का प्रयोग करना होगा। आप ऊपरी बाधाओं या किसी रहस्यमयी बीमारी की चपेट में आ सकती हैं। गोमेद धारण करने से आपको ननिहाल (मामा, मौसी) या चाचा पक्ष से सुख कम प्राप्त

होगा।

राहु वृष राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र दशम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से तकनीकी क्षेत्रों में कार्य करना कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। यंत्रों के रखरखाव और इंजीनियरिंग क्षेत्र में कार्य करने पर आप असुविधा महसूस करेंगे। आजीविका क्षेत्र की विपरीत परिस्थितियों का सामना आप सहजता के साथ नहीं कर पाएंगे। यह रत्न आपको असफलता का स्वाद भी चखा सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपको राजनीतिक क्षेत्र में सफलता बहुत विलंब से प्राप्त होगी। रत्न की प्रतिकूलता आपको अस्पष्ट परिणाम और कमजोर आर्थिक स्थिति प्रदान कर सकती है। साथ ही इस रत्न के प्रभाव से आप अहंकारी और बातूनी स्वभाव के हो सकते हैं।

### हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र दशम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शुक्र रत्न हीरा धारण करने पर कार्यक्षेत्र में आपको विपरीत लिंगियों के कारण कार्य करने में असुविधा हो सकती है। आप विवादों से बचने का भरसक प्रयास करेंगी। कार्यक्षेत्र की परेशानियां आपको अशांत और चिंतित रख सकती हैं। हीरा रत्न आपकी संकल्पशक्ति में कमी कर सकता है। हीरा रत्न भाग्योन्नति और धनलाभ में प्रतिकूल फल दे सकता है। पति का सहयोग कार्यक्षेत्र में प्राप्त नहीं हो पाएगा। गायन, वाहन, साहित्य रचना, कला, वास्तु सज्जा एवं सौंदर्य संबंधी विषयों से जुड़ा कार्यक्षेत्र होने पर यह रत्न आपको विशेष दिक्कतें दे सकता है। दान-पुण्य जैसे कार्यों में श्रद्धा की कमी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आपका मान-सम्मान प्रभावित हो सकता है।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में शुक्र एकादशेश एवं षष्ठेश है। षष्ठेश शुक्र का हीरा रत्न आपको रोग, ऋण एवं शत्रुओं से कष्ट दे सकता है। इसे पहनने के बाद अपमान, चिंता, शंका, पीड़ा एवं असत्य भाषा की प्रवृत्ति आपमें जन्म ले सकती है। एकादश भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण हीरा आपमें लोभ, स्वार्थ एवं बेईमानी के अवगुण ला सकता है। यह रत्न आपके मामा-मौसी से मिलने वाले सुखों में कमी दे सकता है। शत्रुओं को परास्त करने में आपको सामान्य से अधिक मेहनत करनी पड़ सकती है। शुक्र रत्न हीरा के प्रभाव से आपको पिता से अल्पसुख प्राप्त हो सकता है। राज्य व कार्यक्षेत्र से अल्प लाभ व सम्मान न्यून मिलता है। हीरा रत्न आपको रोग एवं ऋण की समस्याएं दे सकता है।

### लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया पहनने पर आप अलौकिक विद्याओं की ओर विशेष रूप से आकर्षित हो सकती हैं। मोक्ष प्राप्ति के लिए आप जीवन के दायित्वों से पीछे हट सकती हैं। आपकी सोच में नकारात्मकता का भाव प्रभावी हो सकता है। यह रत्न आपको आध्यात्मिक मार्ग पर अग्रसर कर सकता है। संतान सुख और धन दोनों पक्ष के लिए रत्न की प्रतिकूलता हो सकती है। यह रत्न विदेश स्थानों में मिलने वाली आपकी सफलता को सीमित कर सकता है। आपके रोग बढ़ सकते हैं। ऋणों का भुगतान आपकी मानसिक चिंताओं को बढ़ा सकता है। इसके अतिरिक्त रत्न प्रभाव से आपके शत्रुओं में बढ़ोत्तरी हो सकती है। लहसुनिया रत्न आपके साहस में कमी करेगा।

केतु वृश्चिक राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल एकादश भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से विदेशी स्रोतों से प्राप्त होने वाली आय बाधित होगी। आपको भाग्योदय

के लिए अपने जन्म स्थान से दूर जाना पड़ सकता है। यह रत्न आपकी दयालुता भाव में भी कमी करेगा। इस रत्न के प्रभाव से आपके बड़े भाई-बहनों की संख्या में कमी हो सकती है। इस कारण आप अपने भाई-बहनों में सबसे बड़े हो सकते हैं। रत्न प्रतिकूलता आपके धन में कमी का कारण बन सकती है। चिकित्सा जगत, औजारों, यंत्रों व हथियारों के निर्माण क्षेत्रों में आपकी विशेषज्ञता प्राप्ति बाधित हो सकती है। यह रत्न आपमें यांत्रिकी संबंधित ज्ञान की कमी कर रहा है।

### मोती

आपकी कुंडली में चंद्र चतुर्थ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर आपका अपनी माता और परिवार से आत्मिक लगाव कुछ कम हो सकता है। उदारता, प्रसन्नता और मानसिक शांति की कमी आप महसूस करेंगे। यह रत्न आपकी माता के स्वास्थ्य को आंशिक कमजोर कर सकता है। विषय वासना के प्रति आपकी रुचि अधिक हो सकती है। मोती रत्न प्रभाव से आपको आराम, अच्छे वाहन, अच्छे मित्र और अचल संपत्ति की प्राप्ति के लिए सामान्य से अधिक मेहनत करनी पड़ सकती है। इसके अलावा यह रत्न आपकी स्मरणशक्ति को भी कमजोर करेगा। रत्न शक्तियां आपमें परोपकार भावना के विकास को बाधित करेंगी।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में चंद्रमा अष्टम भाव के स्वामी हैं। अष्टमेश चंद्रमा का मोती रत्न धारण करना आपके लिए कष्टकारी हो सकता है। मोती रत्न आपके रोगों में वृद्धि एवं आयु में कमी कर सकता है। रत्न के प्रभाव से आपको गहरे जल से कष्ट का भय हो सकता है। मोती रत्न आपको नकारात्मक विचारधारा के साथ अत्यधिक मानसिक चिंताएं भी दे सकता है। इस रत्न को पहनने के बाद आप आर्थिक संकटों के कारण दरिद्रता की स्थिति में पहुंच सकते हैं। मोती रत्न की प्रतिकूलता आपके दुर्भाग्य का कारण बन सकती है और ससुराल पक्ष से संबंध खराब कर सकती है। यह रत्न आपके जीवन के सुखों में कमी कर दुखों में वृद्धि कर सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपको जल जनित रोग हो सकते हैं।

### पन्ना

आपकी कुंडली में बुध अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना पहनने पर आपको त्वचा संबंधी रोग दीर्घकाल के लिए परेशान कर सकते हैं। आपके कष्ट दूसरों के कारण बढ़ सकते हैं। रत्न प्रभाव से आप अपने शत्रुओं पर कठिनाई से विजय प्राप्त कर सकेंगे। पन्ना रत्न प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति कमजोर हो सकती है। शैक्षणिक पक्ष से इस रत्न को धारण करने पर आपकी रुचि गुप्त विद्या और अध्यात्म के प्रति हो सकती है। यह रत्न आपको विलासिता के अवसर दे सकता है। आपको मस्तिष्क और नसों से संबंधित रोग या कष्ट हो सकते हैं।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में बुध सप्तमेश एवं दशमेश है। बुध रत्न पन्ना आपके वैवाहिक जीवन के सुखों में कमी कर सकता है। सप्तमेश का रत्न होने के कारण इस रत्न को धारण करने के बाद आपकी पत्नी अत्यधिक वाचाल होकर आपसे वाद-विवाद कर सकती है। कार्यक्षेत्र में पत्नी का सहयोग आपको समय पर नहीं मिल पाएगा। यह रत्न आपको मित्रों एवं साझेदारों के कारण हानि की स्थिति बना सकता है। पन्ना रत्न पहनने पर आपको ससुराल पक्ष से धन हानि के योग बन सकते हैं।

कर्मक्षेत्र में बुध रत्न पन्ना की शुभता प्राप्त न होने के कारण इस रत्न को धारण करने के बाद आपका साझेदारी का व्यापार आर्थिक रूप से कमजोर हो सकता है। व्यापारिक स्थिति में गिरावट आ सकती है।

## दशानुसार रत्न विचार

### शुक्र

(25/11/2007 - 25/11/2027)

शुक्र की दशा में आपका पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, नीलम, हीरा, गोमेद व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व पन्ना रत्न नेष्ट हैं औरमोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

### सूर्य

(25/11/2027 - 25/11/2033)

सूर्य की दशा में आपका पुखराज व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम व मोती रत्न नेष्ट हैं औरगोमेद, हीरा, लहसुनिया व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

### चन्द्र

(25/11/2033 - 25/11/2043)

चन्द्र की दशा में आपका पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, माणिक्य व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, हीरा व पन्ना रत्न नेष्ट हैं औरगोमेद व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

## मंगल

(25/11/2043 - 25/11/2050)

मंगल की दशा में आपका पुखराज व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, नीलम व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा व मोती रत्न नेष्ट हैं औरगोमेद व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

## राहु

(25/11/2050 - 24/11/2068)

राहु की दशा में आपका पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, गोमेद, मूंगा व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं औरलहसुनिया, पन्ना व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

## गुरु

(24/11/2068 - 24/11/2084)

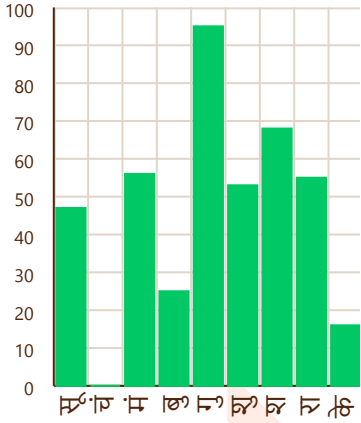
गुरु की दशा में आपका पुखराज व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

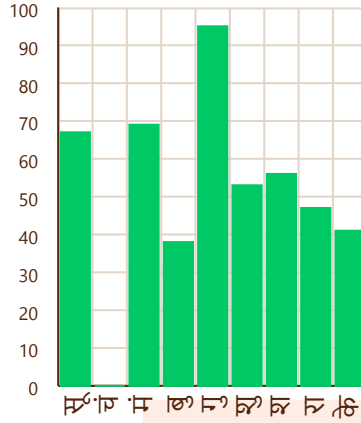
गोमेद, लहसुनिया व मोती रत्न नेष्ट हैं औरहीरा व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

# दशा ग्राफ

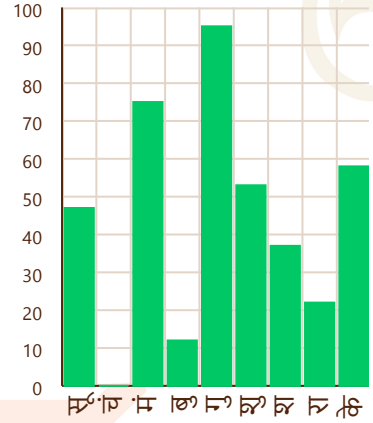
शनि - 25/11/1983



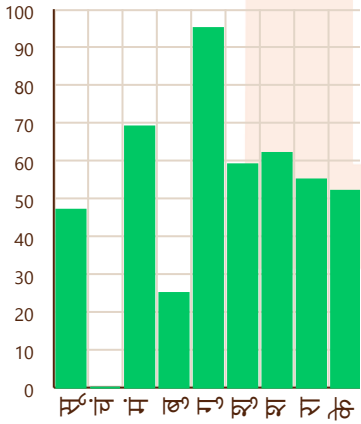
बुध - 24/11/2000



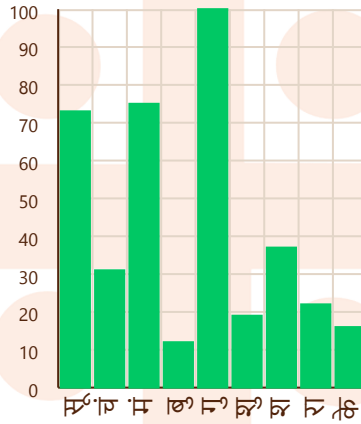
केतु - 25/11/2007



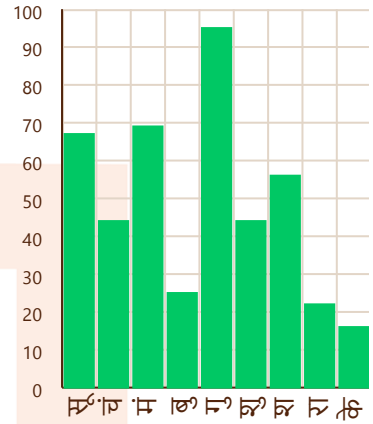
शुक्र - 25/11/2027



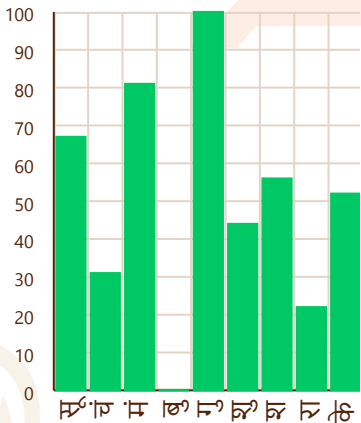
सूर्य - 25/11/2033



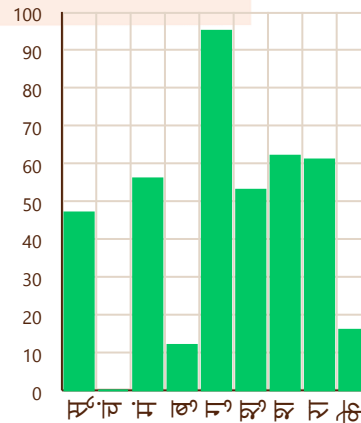
चन्द्र - 25/11/2043



मंगल - 25/11/2050



राहु - 24/11/2068



गुरु - 24/11/2084

